

पद १५८

(राग: सोहनी - ताल: झंपा)

सच्चिदानंद गुरु एकहि साच और इतर गुरु झूठ पहचानले हो
मना। माया विलास सब नाम और रूप त्यज, सकल जग परब्रह्म
देखले हो मना ॥ध्रु.॥ वोही जगरूप और वोही गुरुभूप मन, जीव
शिवभूत पंचक त्रिगुण सारा। एक सतरूपही बहुविधा होत है,
श्रुतिवाक्य वेदांत मान ले हो मना ॥१॥ शबलार्थ छांड और शुद्ध
सो ग्राह्य कर भाग लछन महावाक्य साथे। ब्रह्म जो जाने सो
ब्रह्मही होत है, निगम डंकार सुन, बूझले हो मना ॥२॥ नित्यसो
सत्य ज्ञानसो चैतन्य परम सुख अतहि आनंद पद साजे। अचल
अविनाम अज एक गुरु अवधूत ज्ञानघन मातार्ड जान ले हो
मना ॥३॥